बी.एच.आई.सी.-111 : आधुनिक यूरोप का इतिहास-I (*c.* 1780-1939)
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः बी.एच.आई.सी. -111
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.आई.सी. -111 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027
अधिकतम अंकः 100

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित है। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) फ्रांस के क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए जमीन तैयार करने वाले प्रमुख कारक कौन–कौन से थे? विवेचना कीजिए। 20

2) नगरीय विकास पर औद्योगीकरण के प्रभावों की चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) प्रारंभिक समाजवादी विचारकों के योगदान पर एक टिप्पणी लिखिए। 10

4) मेटरनिख प्रणाली क्या थी? यह क्यों असफल हुई? 10

5) उदारवादी लोकतंत्र ने यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास को किस प्रकार प्रोत्साहित किया? 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) नौकरशाही 6

7) धार्मिक विभाजन और अनुबंध 6

8) 19वीं से 20वीं शताब्दी के यूरोप में महिला अधिकार आंदोलन 6

9) जर्मन राष्ट्र की अवधारणा 6

10) स्टालिनवादी तीस का दशक 6

1) फ्रांस के क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए जमीन तैयार करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से थे? विवेचना कीजिए। 20

उत्तर

प्रस्तावना

वर्ष 1789 की फ्रांसीसी क्रांति यूरोप के आधुनिक इतिहास में निर्णायक परिवर्तन थी। इसने निरंकुश राजसत्ता, जन्म-आधारित विशेषाधिकार तथा सामंती दायित्वों को चुनौती देकर नागरिक समानता और जनसत्ता की कल्पना को बल दिया। क्रांति केवल राजकोष की तात्कालिक कठिनाई या किसी एक विचारक की देन नहीं थी। इसके पीछे दीर्घकालीन सामाजिक विषमता, कृषि संकट, आर्थिक परिवर्तन, प्रबोधन के विचार, राज्य की वित्तीय विफलता और 1788–89 की राजनीतिक घटनाएँ परस्पर जुड़ी थीं। इन कारकों ने मिलकर पुराने शासन के प्रति असंतोष को व्यापक जनांदोलन में बदल दिया।

पुराने शासन की सामाजिक संरचना और विशेषाधिकार

फ्रांस का समाज परंपरागत रूप से तीन एस्टेटों में विभाजित था। प्रथम एस्टेट में पादरी, द्वितीय में कुलीन वर्ग और तृतीय में किसान, शहरी श्रमिक, कारीगर, व्यापारी तथा मध्यवर्ग शामिल थे। पहली दो श्रेणियों को अनेक करों में छूट तथा सामाजिक-राजनीतिक विशेषाधिकार प्राप्त थे; जबकि करों और सामंती देयों का भारी भाग तृतीय एस्टेट उठाता था। सभी कुलीन समान रूप से धनी नहीं थे और सभी पादरी विशेषाधिकार-संपन्न नहीं थे, फिर भी व्यवस्था का सार्वजनिक आधार जन्म से मिलने वाला दर्जा था। इसी कारण समान अधिकार की माँग केवल आर्थिक प्रश्न न रहकर राजनीतिक चुनौती बनी।

ग्रामीण क्षेत्रों में किसान भू-स्वामियों को सामंती शुल्क, कुछ क्षेत्रों में श्रमसेवा और चर्च को दशमांश देते थे। राज्य को अलग कर चुकाने के बाद उनके पास उत्पादन का सीमित हिस्सा बचता था। शिकार-संबंधी सामंती अधिकार और न्यायिक प्रभुत्व भी किसान असंतोष के स्रोत बने। किसान भूमि पर अधिकार, मनमाने देयों की समाप्ति और स्थानीय न्याय में बदलाव चाहते थे।